



पत्र-पुष्प



“सदा उपराम व साक्षी-दृष्टा स्थिति द्वारा लगावमुक्त बनो” दादी जी की शुभ प्रेरणायें (22-02-22)

विश्व कल्याणकारी सर्व आत्माओं के अति प्रिय, मुक्ति जीवनमुक्ति दाता शिव भोलानाथ बाबा के अति लाडले, ब्रह्मा बाप की राइट हैण्ड भुजायें, सन्देश वाहक बन सर्व को परमात्म अवतरण का दिव्य सन्देश देने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ “महा-शिवरात्रि” के पावन पर्व तथा होली के पावन उत्सव की सबको बहुत-बहुत दिल से हार्दिक बधाईयां।

बाद समाचार - वर्तमान समय आप सब जन-जन को शिव भोलानाथ बाबा के दिव्य अवतरण का शुभ सन्देश देने की सेवायें चारों ओर खूब धूमधाम से कर रहे हो। सभी को सेवाओं के सफलता की मुबारक हो। यह भी ड्रामा में फिर से भिन्न-भिन्न रीति से सेवा करने का चांस मिला है, लेकिन बाबा कहते बच्चे, वाचा सेवा के साथ-साथ शक्तिशाली मन्सा द्वारा विशेष सेवा के अनुभवी बनो। अब मास्टर विश्व-रक्षक बन अपनी ऊंची स्थिति में स्थित हो पूरे ग्लोब को शुभ भावनाओं की सकाश देते रहो। हर एक लक्ष्य रखे कि प्रतिदिन कम से कम दो घण्टा मन्सा सेवा करनी ही है। सेवा और स्व-स्थिति का बैलेन्स सदा बना रहे, उसके लिए ब्रह्मा बाप समान साकार में होते हुए आकारी और निराकारी स्थिति में रहने का अभ्यास करना है। दृष्टा बन इस पुरानी दुनिया का खेल देखते व्यक्त भाव से परे, व्यक्त देश की स्मृति से उपराम वा साक्षी रहना है। जैसे सेवायें तीव्र रूप से बढ़ रही हैं, ऐसे बेहद की उपराम वृत्ति, बेहद की वैराग्य वृत्ति तीव्र हो तब समाप्ति होगी। तो चेक करना है कि कर्म करते हुए अकर्ता, सम्पर्क-सम्बन्ध में रहते हुए लगावमुक्त, कर्मातीत स्टेज कहाँ तक रहती है? सर्विस में निमित्त भाव रहता है? स्थिति निर्मानचित्त रहती है?

यह मार्च का महीना हम सबकी अति स्नेही दोनों दादियों द्वारा मिली हुई पालना की विशेष स्मृति दिलाता है। हमारी मीठी दादी गुल्जार जी की प्रथम पुण्य तिथि 11 मार्च को है और दादी जानकी जी की दूसरी पुण्य तिथि 27 मार्च को है। हमारी इन दादियों ने अथक बन जिस प्रकार देश विदेश के सभी ब्रह्मा वत्सों की ज्ञान योग से की पालना की है। हर एक के दिल में उसकी अमिट छाप है। हर एक बाबा का बच्चा अपनी त्रिमूर्ति दादियों को दिल से दुआयें देता रहता है। उनकी याद आते ही वह खुशनुमाः, निःश्लल मुस्कराती सूरत नयनों के सामने घूम जाती है। सभी अनुभव करते हैं कि बापदादा के साथ हमारी दादियां भी हम सबको अपनी सूक्ष्म सकाश देते हुए आगे बढ़ा रही हैं। उनकी शुभ भावनायें पूरे यज्ञ को निर्विघ्न रख, सेवाओं की तीव्र वृद्धि के निमित्त बनी हुई हैं। बोलो, आप सब भी ऐसा ही अनुभव करते हो ना। जैसे मधुबन में आने वाले हर बच्चे को बापदादा अपनी हाज़िरी का अनुभव कराते हैं, सबकी झोली वरदानों से भर देते हैं। वैसे ही हमारी दादियां भी अव्यक्त रूप में हम सबके सामने हाज़िर-नाज़िर अनुभव होती हैं। अभी मीठी गुल्जार दादी जी की स्मृति में बहुत सुन्दर ‘अव्यक्त लोक’ तैयार हो रहा है। 11 मार्च को अनेक ब्रह्मा वत्सों की उपस्थिति में स्नेह पुष्पांजलि के साथ इसका लोकार्पण किया जायेगा। बाकी बापदादा की यह सृजन भी बहुत निर्विघ्न, अच्छे से अच्छी चली है। अभी तीन गुप और आने हैं। फिर तो वार्षिक मीटिंग में पूरे वर्ष के कार्यक्रम निर्धारित किये जायेंगे। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,
बी. के. रतनमोहिनी



ये अव्यक्त इशारे



समय प्रमाण उपराम और साक्षी-दृष्टा बनो

- 1) उपराम वा दृष्टा स्थिति बनाने के लिए दो बातें ध्यान पर रखनी हैं - एक तो मैं आत्मा महान् आत्मा हूँ, दूसरा मैं आत्मा अब इस पुरानी सृष्टि में वा इस पुराने शरीर में मेहमान हूँ। तो महान् और मेहमान, यह दोनों स्मृति रहने से स्वतः और सहज ही सर्व लगावों की आकर्षण से मुक्त उपराम व दृष्टा स्थिति बन जायेगी।
- 2) जैसे बाप समझते हैं मेरा शरीर नहीं, लोन लेकर पार्ट बजाते हैं, ऐसे आप भी शरीर का आधार लेकर कर्म करो, इसे मेरा नहीं समझो, अगर मेरा समझेंगे तो सभी बातें आ जायेंगी। मेरापन खत्म होते ही उपराम हो जायेंगे।
- 3) अपनी देह से भी उपराम और दृष्टा। अपनी बुद्धि से उपराम, संस्कारों से भी उपराम। मेरे संस्कार हैं, इस मेरेपन से भी उपराम। मैं यह समझती हूँ, इस मैं पन से भी उपराम। साथ-साथ अपने व अन्य के पार्ट को देखते हुए दृष्टा, जो ऐसी साक्षीदृष्टा स्थिति में रहते हैं उनका ही दृष्टान्त देने में आता है।
- 4) ज्ञान की बुद्धि के बाद जो मैंपन आता है, वह मैंपन बहुत नुकसान करता है। एक तो मैं शरीर हूँ, यह छोड़ना है, दूसरा मैं समझती हूँ, मैं ज्ञानी तू आत्मा हूँ, मैं बुद्धिमान हूँ, यह मैं पन भी मिटाना है। जहाँ मैं शब्द आता है वहाँ बापदादा याद आये। जहाँ मेरी समझ आती है वहाँ श्रीमत याद आये। यह मैं और मेरा, तू और तेरा यह चार शब्द मिट जाएं तो उपराम स्थिति बन जायेगी।
- 5) हरेक अपने को चेक करो कि मेरी बुद्धि बिल्कुल उपराम रहती है? जैसे साकार रूप के संस्कार उपराम और साक्षीदृष्टा के रहे, यही साकार के सम्पूर्ण स्थिति के श्रेष्ठ लक्षण थे। इन संस्कारों में समानता लानी है। इन गुणों से सर्व के दिलों पर विजयी होंगे। अभी जो सर्व के दिलों पर विजयी बनते हैं वही भविष्य में विश्व महाराजन बनते हैं।
- 6) जैसे ब्रह्मा बाप साकार होते हुए आकारी और निराकारी स्थिति में रहने कारण सदा उपराम रहे। ऐसे फालो फादर। दृष्टा बन ऊपर से इस पुरानी दुनिया को खेल सदृश्य देखो। यही स्टेज अभी सदाकाल की होनी चाहिए। इसके लिए सदा व्यक्त भाव से परे, व्यक्त देश की स्मृति से उपराम अर्थात् साक्षी बनने से हर समय साथ का अनुभव कर पायेंगे।
- 7) जितना बेहद के विशाल स्वरूप की सर्विस तीव्र रूप से बढ़ती जा रही है, उतना ही बेहद की उपराम वृत्ति तीव्र चाहिए। आपकी

बेहद की उपराम वृत्ति अथवा वैराग्य वृत्ति अन्य आत्माओं में भी वैराग्य उत्पन्न करेगी। वैराग्य के बाद ही समाप्ति होगी। इसके लिए कर्म करते हुए अकर्ता, सम्पर्क-सम्बन्ध में रहते हुए कर्मातीत स्टेज रहे, कहाँ भी लगाव न हो, सर्विस में भी निमित्त भाव बना रहे।

8) स्थूल कारोबार करते भी स्थिति सदा उपराम रहे। इशारे में सुना, डायरेक्शन दिया और फिर अव्यक्त वतन में। जैसे साकार में देखा, अनुभव किया, नीचे आये, डायरेक्शन दिया, सुना और फिर ऊपर। अभी जिम्मेवारियाँ तो और भी बढ़ेंगी। ऐसे नहीं कि जिम्मेवारियाँ कम होगी, तब फरिश्ता बनेंगे, नहीं! जिम्मेवारियाँ निभाते हुए उपराम और दृष्टा रहने का अभ्यास करो तब सम्पन्नता समीप आयेगी।

9) जैसे चित्रों में श्रीकृष्ण को सृष्टि के ग्लोब पर दिखाया है, ऐसे अपनी प्रैक्टिकल स्थिति का चित्र बनाओ। इस व्यक्त देश व इस पुरानी दुनिया से उपराम। व्यक्त भाव और व्यक्त वस्तुओं आदि सबसे उपराम अर्थात् इनके ऊपर साक्षी होकर खड़े हैं। इस पुरानी दुनिया में, जैसे अपनी स्व-इच्छा से, अपने रचे हुए संकल्प के आधार से अव्यक्त से व्यक्त में आये, व्यक्ति व वस्तुओं की आकर्षण के अधीन होकर नहीं।

10) हर एक के अन्दर अब यही धुन लगनी चाहिए कि हमें वापिस घर जाना है। जब अपने निराकारी घर जाना है तो जैसा देश वैसा अपना वेष भी बनाना है। घर जाने की स्मृति स्वतः ही सर्व-सम्बन्ध, सर्व प्रकृति की आकर्षण से उपराम अर्थात् साक्षी बना देगी।

11) जैसे बाप ईश्वरीय सेवा-अर्थ वा बच्चों को साथ ले जाने की सेवा-अर्थ वा सच्चे भक्तों को बहुत समय की भक्ति का फल देने अर्थ न्यारे और निराकार होते हुए साकार का आधार लेते हैं वा अवतरित होते हैं। ऐसे ही ईश्वरीय सेवा अर्थ शरीर में आये, कार्य पूरा हुआ न्यारे और प्यारे। बाप समान स्वयं को अवतरित आत्मा समझकर चलो।

12) हर कर्म को श्रेष्ठ कर्म वा सुकर्मी बनाने के लिए त्रिकालदर्शीपन के स्मृति स्वरूप बन हर कर्म के तीनों कालों को जानने वाले बनो, तब हर कार्य, हर संकल्प सिद्ध होगा। फिर पुराने संस्कार स्वभाव से उपराम, सदा साक्षीपन की सीट पर स्वयं को सेट हुआ

अनुभव करेंगे।

13) अभी अनुभवों के गुह्यता की प्रयोगशाला में रहने का अभ्यास करो। ऐसे महसूस हो जैसे यह सब कोई विशेष लगन में मगन इस संसार से उपराम हैं। कर्म और योग का बैलेन्स और आगे बढ़ाओ। कर्म करते योग की पॉवरफुल स्टेज रहे। यह बैलेन्स रखने से पुरुषार्थ की गति तीव्र हो जायेगी।

14) सदा स्मृति रहे कि हम इस मृत्युलोक के नहीं लेकिन अवतार हैं। सिर्फ यह छोटी सी बात याद रहे तो उपराम हो जायेगे। अगर अपने को अवतार न समझ गृहस्थी समझते हो तो गृहस्थी की गाड़ी कीचड़ में फँसी रहती। गृहस्थी है ही बोझ की स्थिति और अवतार बिल्कुल हल्का। वह फँसा हुआ है, वह बिल्कुल न्यारा है।

15) योग युक्त, युक्तियुक्त सेवाधारी सदा सेवा करते भी उपराम रहते हैं। ऐसे नहीं कि सेवा ज्यादा है इसलिए अशरीरी नहीं बन सकते। याद रखो मेरी सेवा नहीं, बाप ने दी है, तो निर्बन्धन रहेंगे। 'ट्रस्टी हूँ, बन्धन मुक्त हूँ' ऐसी प्रैक्टिस करो। अति के समय अन्त की स्टेज, कर्मातीत अवस्था का अभ्यास करो तब कहेंगे तेरे को मेरे में नहीं लाया है।

16) सदा परमात्म स्नेह में समाये रहो, एक से सर्व सम्बन्धों की अनुभूति करो और उनसे होने वाली प्राप्ति में मगन रहो तो पुरानी दुनिया के वातावरण से सहज ही उपराम हो जायेगे। पहले देह से उपराम बनो फिर देह के सम्बन्ध और वैभवों से उपराम सहज हो जायेगे। यह उपराम अवस्था अति न्यारी प्यारी है। अभी-अभी कार्य में आये, अभी-अभी उपराम। ऐसा अनुभव करो।

17) स्वयं को ट्रस्टी समझकर चलो तो कभी क्या होगा, कैसे होगा, कुछ भी सोचने की जरूरत नहीं। सहज ही लगाव झुकाव से किनारा हो जायेगा। आज यहाँ हैं, कल कहाँ भी चले जायें, सदा उपराम रहेंगे। आज यहाँ कल वहाँ। पंछी हैं आज एक डाल पर, कल दूसरी डाल पर तो स्थिति उपराम रहेगी।

18) उपराम स्थिति में रहना, यही उड़ती कला की निशानी है। उड़ता पंछी बन कर्म के इस कल्प वृक्ष की डाली पर आओ, फिर न्यारे बन जाओ। अपने समर्थ स्वरूप से कर्म करो और न्यारे हो जाओ। कर्म रूपी डाली के बन्धन में कभी फंसना नहीं।

19) इसी निश्चय और नशे में रहो कि हम टैम्पेरी समय के लिए सेवा अर्थ इस साकार शरीर में आये हैं, अवतार हैं, आये हैं, अब जाना है। यही स्मृति उपराम और अपरमअपार प्राप्ति की अनुभूति कराने वाली है। एक तरफ उपराम दूसरे तरफ अपरमअपार प्राप्ति। दोनों अनुभव साथ-साथ हो।

20) जैसे साकार में देखा, इतना विस्तार होते हुए भी अन्तिम स्टेज कितनी उपराम रही। सेकण्ड में विस्तार को समेट लिया। अभी-अभी कार्य व्यवहार के लिए स्थूल डायरेक्शन दे रहे हैं, अभी-अभी अशरीरी स्थिति का अनुभव करा रहे हैं। समेटने की शक्ति से उपराम और दृष्टा बन सम्पन्न बन गये। ऐसे फालो फादर करो।

21) अन्त समय में ब्रह्मा बाप के सामने स्नेही बच्चे, अनन्य बच्चे होते हुए भी बेहद का वैराग्य रहा। हाथ में हाथ होते हुए भी लगाव मुक्त रहे। इसको कहा जाता है सेकण्ड में उपराम। यह बेहद के वैराग्य का सबूत है। एक ही लगन सेवा, सेवा और सेवा..... और सभी बातों से उपराम, इसको कहा जाता है बेहद का वैराग्य। सेवा करो लेकिन सेवा में भी उपराम, बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज रहे।

22) योग अर्थात् याद की सबजेक्ट में रूचि वा अटेन्शन हो, यदि बिना याद के सेवा में रूचि ज्यादा है तो उसमें भी हद आ जाती है। उपराम वृत्ति नहीं होती। नाम और मान का, पोजीशन का.. मिक्स हो जाता है। बेहद की वृत्ति कम हो जाती है इसलिए याद और सेवा का बैलेन्स रखकर आगे बढ़ते चलो।

23) अभी चारों ओर देह भान से उपराम रहने की लहर होनी चाहिए। पहले देह भान से वैराग्य वृत्ति, देह की बातों से वैराग्य वृत्ति, देह की भावना, भाव, इससे वैराग्य वृत्ति चाहिए। स्वयं की व सहयोगी आत्माओं की श्रेष्ठ उन्नति तब होगी जब वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल बनेगा।

24) हर कार्य करते हुए, पार्ट बजाते हुए स्वयं को न्यारी अवस्था में रहेंगे तो उनकी चलन से, बोल-चाल से औरों को उपराम स्थिति का अनुभव होगा। जितना स्थिति ऊपर जायेगी, उतना उपराम होते जायेगे। शरीर में होते हुए भी इस उपराम अवस्था तक पहुँचना है। बिल्कुल देह और देही अलग महसूस हो।

25) अभी अभी शरीर का आधार लिया, अभी अभी न्यारे हो गये। साक्षी बनकर हर कर्म करो और साथी को सदा साथ रखो तो बन्धनमुक्त अवस्था बहुत जल्दी बन सकती है क्योंकि सर्वशक्तिमान का साथ होने से शक्तियाँ भी सर्व प्राप्त हो जाती हैं और साथ-साथ साक्षी बनकर चलने से कोई भी बन्धन में फंसते नहीं। सदा उपराम रहते हैं।

26) हर समय माया और प्रकृति के पपेट शो में मनोरंजन का अनुभव करने के लिए अपने स्थिति की सीट सदा साक्षीदृष्टा की चाहिए। दृष्ट कितना भी बदलता रहे लेकिन साक्षी दृष्टा की सीट पर स्थित रहने वाली सन्तुष्ट आत्मा साक्षी हो, हर परिस्थिति को स्व-स्थिति से बदल देती है।

27) विशेष जब अनेक जन्मों का हिसाब-किताब एक जन्म में चुक्ती करते हो तो कभी-कभी वह फोर्स का रूप ले लेता है, उस समय जो युद्ध चलती है, उसमें साक्षी (न्यारा) हो देखना, जिससे व्याधि बदलकर खेल रूप में अनुभव हो, इसका अभ्यास बढ़ाओ। उस समय मैं बीमार हूँ नहीं, मेरा शरीर बीमार है नहीं, यह तेरी अमानत है तुम जानो। मैं साक्षीदृष्टा बन आपके अमानत की सेवा कर रही हूँ, इसको कहा जाता है साक्षीदृष्टा उपराम स्थिति।

28) जो सहनशील है, वही ड्रामा की ढाल पर ठहर सकता है अर्थात् साक्षी रह सकता है। सहनशीलता नहीं तो ड्रामा की ढाल को पकड़ना भी मुश्किल है। इस समय जो भी कर्म करते हो उसमें करन-करावनहार की स्मृति सदा रहे। कराने वाला बाप है, करने वाला निमित्त हैं, अगर यह स्मृति में रख कर्म करो तो अनुभव होगा कि साक्षी हो जैसे पार्ट बजा रहे हैं। पार्ट बजाते हुए सदा वृत्ति उपराम रहेगी।

29) जैसे दूसरों के संस्कारों को साक्षी होकर देखते हो वैसे

अपने तमोप्रधान स्टेज के संस्कारों को भी साक्षी होकर देखो और समाप्त करो। अनुभव करो जैसे यह संस्कार योग अग्नि में स्वाहा हो रहे हैं, ऐसा समझने से ही सदा सफलता को पाते रहेंगे।

30) जैसे हृद का ड्रामा साक्षी हो देखा जाता है फिर चाहे दर्दनाक हो या हंसी का हो, दोनों पार्ट साक्षी हो देखते हैं, अन्तर नहीं होता है क्योंकि ड्रामा समझते हैं। तो हर समय ऐसी एकरस अवस्था रहे उसके लिए चाहे रमणीक पार्ट हो, चाहे कोई स्नेही आत्मा का गम्भीर पार्ट भी हो तो भी साक्षी होकर देखो। साक्षी दृष्टा की अवस्था में रहो। घबराई हुई या युद्ध करती हुई अवस्था न हो।

31) इस बेहद के खेल का नाम है वैरायटी ड्रामा, इसमें वैरायटी संस्कार, वैरायटी स्वभाव व वैरायटी परिस्थितियाँ तो होंगी ही। उसे साक्षीदृष्टा बन एक-रस स्थिति में स्थित हो देखेंगे तो पुरुषार्थ मुश्किल अनुभव नहीं होगा। साक्षीपन की सीट पर सेट होकर वैरायटी ड्रामा की स्मृति रखते हुए, एक-एक पार्टधारी का हर पार्ट देखो तो सदैव हर्षित रहेंगे। मुख से वाह-वाह निकलेगी, सदा खुशी में झूमते रहेंगे।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

दादी हृदयमोहिनी जी के वरदानी महावाक्य - वरदान प्राप्ति करने की अलौकिक विधियाँ (दादी जी के प्रथम पुण्य स्मृति दिवस पर)

1) दुनिया में अगर वरदान प्राप्त करना होता है, तो अपना मस्तक झुकाना पड़ता है लेकिन हमें वरदान लेने के लिए, वरदान का अनुभव करने के लिए हमारा मन एकाग्र होना चाहिए। अगर मन एकाग्र नहीं है, हलचल में है तो वरदान सुनने में भले बहुत अच्छा लगेगा लेकिन अन्दर उसका फल नहीं मिलेगा। वरदान लिफ्ट का काम करते हैं, मेहनत से मुक्त कर देते हैं। इसमें विशेष अटेंशन देने की जरूरत है।

2) मन की एकाग्रता के साथ बुद्धि बहुत क्लीन और क्लीयर हो। अगर बुद्धि में जरा भी सफाई नहीं है तो वरदान बुद्धि में ग्रहण नहीं हो सकता। भोलानाथ बाबा को राजी करने की सहज विधि है, सच्चाई और सफाई। पहले सच्ची दिल से जो भी अपनी कमजोरी है उसे महसूस करें। पुरानी कोई भी नेचर व संस्कार है वह सब बाबा के आगे स्पष्ट हो।

3) अपनी कमी कमजोरी को मिटाने के लिए बाबा को अपना दिलाराम समझकर महसूसता व दृढ़ता से बाबा को सुना दो - बाबा ये मेरी कमजोरी है, आप मिटा दो। आप मुझे मदद करो तो मैं करके दिखाऊंगी। बाबा कहता है मैं मदद तो करता हूँ, पर मिटाना तो आपको ही पड़ेगा।

4) सच्चाई और सफाई से हम बाबा को अपना बना सकते हैं। वो संस्कार जो मोटे-मोटे तो खत्म हो गये हैं। सूक्ष्म रूप के संस्कार पुरुषार्थ में गैलप नहीं करने देते हैं। जो मैं बुद्धि से करना चाहूँ, बुद्धि और कहाँ भटके नहीं इसको कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थ। नेचर, जिसको हम सूक्ष्म संस्कार कहते हैं, उसे भी अब खत्म करना है।

5) वरदान में बाबा कोई न कोई शक्ति ही देता है। वरदान में ली हुई शक्तियाँ हमारे जीवन का आधार होना चाहिए। जिस समय

हमको जिस शक्ति की आवश्यकता है, उस समय वो शक्ति काम आये। बाबा ने वरदान दिया है कि सब बच्चे मेरे राजे बच्चे हो। आप आत्मा मालिक हो इन कर्मेन्द्रियों की। हम राजयोगी हैं प्रजायोगी नहीं। बाबा ने हम बच्चों को पहला वरदान स्वराज्य अधिकारी भव का दिया है। वो वरदान जिस समय चाहिए उसी समय काम में आये। मन-बुद्धि संस्कार हमारे कंट्रोल में हों।

6) अगर कोई पूछे कि भगवान कहाँ रहता है? तो आप फलक से कह सकें कि भगवान मेरे दिल में रहता है। उसको और कोई जगह अच्छी ही नहीं लगती है। लेकिन अगर आपके मन में रावण की कोई चीज़ है, तो वहाँ बाबा कैसे रहेगा! इसलिए हमारी दिल साफ, पुराने संस्कार से मुक्त होनी चाहिए। तब हम कह सकेंगे कि बाबा से जो वरदान मिला वह स्वरूप में समाया है और समय पर काम में आता है। पेपर अधिकतर उनसे ही आते हैं जिनके साथ कनेक्शन होता है। उस पेपर में हमें पास होना है।

7) बाबा से वरदान प्राप्त करने के लिए अपनी सूक्ष्म चेकिंग करनी होगी। कोई भी कमजोर संस्कार, चाहे नाममात्र हों, बड़े रूप में नहीं हों तो भी वरदान भले सुनने में अच्छा लगेगा लेकिन काम नहीं आयेगा। हमारा सदगुरु इतना भोला है जो पोस्ट में भी वरदान भेज देता है। लेकिन वह वरदान, शक्तियाँ, गुण सब जीवन में धारण होने चाहिए, अगर एक भी मिस किया तो धोखा मिल जायेगा।

8) कोई कोई कहते हैं मेरे में और कोई विकार नहीं है लेकिन आलस्य है, डोन्टकेयर करते हैं, समाने की शक्ति नहीं है, तो यह कमी भी हमें समय पर धोखा दे देगी। अभी हमें बाबा से सर्व शक्तियों का वरदान लेना है, सर्वगुण सम्पन्न बनना है। हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, बाबा ने सर्वगुण सम्पन्न देवता पद की प्राप्ति कराई है। तो हमारे जीवन में सब चाहिए।

9) किसी भी मर्यादा की पालना में अगर कमी है तो भी हम बाप समान सम्पन्न नहीं बन सकेंगे। ब्रह्मा बाप ने कितनी मर्यादायें जीवन में धारण की, कितनी सेवायें की। लास्ट दिन तक भी कितने पत्र लिखे। कोई दिनचर्या लास्ट दिन तक भी मिस नहीं की। तो समान बनना माना, गुण और शक्तियाँ मेरे में पूरी-पूरी धारण हों।

10) अमृतवेले से लेकर रात्रि तक जो भी श्रीमत है, उसी प्रमाण हमें चलना है। मुरली भी विधिपूर्वक सुननी है। मर्यादायें भी विधिपूर्वक पालन करनी है। हमें मर्यादाओं पर चलते, वरदान को स्वीकार करके उसे स्वरूप में लाना है। सिर्फ वर्णन नहीं करना है, स्वरूप बनकर दिखाना है।

11) बाबा हम बच्चों से जो चाहते हैं, हम वही करके दिखायें। अभी गोल्डन चांस है। जैसे मम्मा का एक ही शब्द था, बाबा का कहना और मेरा करना। बाबा के मुख से जो निकला वो मुझे करना ही है, होना ही है। ऐसा निश्चय प्रैक्टिकल लाइफ में हो।

12) यह डायरेक्ट भगवान से मिले हुए वरदान हैं, कोई महात्मा से नहीं। इस एक-एक वरदान में कितनी ताकत भरी हुई है। वो ताकत समय पर काम आये। इसके लिए मन की एकाग्रता, दृढ़ता और बुद्धि की क्लीननेस और क्लियरनेस जरूर चाहिए।
(पूछे गये प्रश्नों का गुल्जार दादी जी द्वारा समाधान)

प्रश्न:- शुरु में जो नशा था, साक्षात्कार की लहर, उमंग-उत्साह था। बाबा ने कहा था कि जो बचपन में लहर और उत्साह था वो फिर से आयेगा। अभी तो पुरुषार्थ की ही बात चल रही है, बाबा का मैजिक तो नहीं हो रहा है। तो वो फिर कब से होगा और कैसे होगा? अभी भी मेहनत के बजाय जादू से क्यों नहीं हो रहा है? यह ज्वालामुखी भट्टी जैसी मेहनत क्यों कर रहे हैं?

उत्तर:- पहले साक्षात्कार दिव्य दृष्टि से हुआ और अभी हमारा पुरुषार्थ है दिव्य बुद्धि का, प्रैक्टिकल लाइफ का। अभी साक्षात्कार प्रैक्टिकल जीवन से अनुभव होगा। उस समय साक्षात्कार हुआ लेकिन हमारे पास कोई एगजैम्पल नहीं था। अभी तो सबके सामने हरेक चीज़ का एगजैम्पल है। उस समय शिवबाबा का भी ज्ञान नहीं था, सिर्फ कृष्ण और स्वर्ग का ही ज्ञान था। हमको स्वर्ग में जाना है और बाबा हमेशा कृष्ण ही दिखाई देता था। वो उस समय के लिए आवश्यक था, हमारे आगे पुरुषार्थ की बात थी ही नहीं, भाव-स्वभाव था ही नहीं, सेवा थी ही नहीं। अभी तो देखो सेवा का संसार बन गया है। अभी पुरुषार्थ करने वालों को मेहनत नहीं लगनी चाहिए। यह अवश्य है जितना हम आगे पढ़ाई पढ़ेंगे उस अनुसार ही पेपर आयेंगे। अभी हमारे में शक्तियाँ भी तो बढ़ी हैं ना। पहले नॉलेज भी कम थी, नॉलेज इज़ माइट वो भी कम थी। छोटे बच्चे को छोटा पेपर और बड़े बच्चे को पेपर भी बड़ा आयेगा।

जैसे बाबा कहते हैं तुम कर्मयोगी बनो। कर्मयोगी बनते बनते कर्म-कान्सेस बन जाते हैं। जब समस्या आती है तो बुद्धि में एकदम समस्या के संकल्प चलने लगते हैं - क्या, क्यों, कैसे में बुद्धि चली जाती है। अगर बुद्धि क्लीन हो तो वह टचिंग भी आये। अभी वह नहीं है।

पहले छोटे पेपर भी कठिन लगते थे, अभी पेपर तो बड़े हो गये लेकिन हमारी बुद्धि या स्थिति बड़ी नहीं हो पायी है इसलिए पेपर

कठिन लगते हैं। जिस स्थिति के अनुसार पेपर हैं, उस स्थिति में हम नहीं पहुंचे हैं।

बाबा के प्यार वा ज्ञान के प्रकाश में रहते हैं तो ज्ञान को सही तरह यूज करने से बड़े से बड़ी परीक्षा वा समस्या का समाधान आसानी से हो जाता है। यह जैसे जादू हो जाता है, इससे हमारी पर्सनैलिटी भी डेवलप होती है, जिसका साक्षात्कार सबको होता है।

प्रश्न:- बाबा कई बार हम बच्चों को कहते हैं समय हमारे कारण रुका हुआ है, परन्तु जब हम साक्षी होकर देखते हैं, तो संकल्प आते हैं कि हम कहीं सम्पूर्णता के बजाए पीछे तो नहीं जा रहे हैं। अभी तक कईयों के संस्कारों में तमोप्रधानता दिखाई देती है। तो समय को समीप कौन लायेगा? ब्राह्मणों के सतोप्रधानता की स्थिति कब आयेगी?

उत्तर:- सब एक जैसे तो नहीं हो सकते। बाबा कहते बच्चे, यह राजधानी स्थापन हो रही है। उसमें सब कोई रायल फैमिली में नहीं आने हैं। सबको राजा महाराजा नहीं बनना है। जिसको जो पद पाना है उसी अनुसार उसके संस्कार दिखाई दे रहे हैं। बाकी ब्राह्मणों में गुप्त पुरुषार्थी भी हैं। अभी राज्य और धर्म दोनों की स्थापना हो रही है इसलिए सभी की स्थिति एक जैसी नहीं हो सकती है। जो करते हैं, जो उमंग में हैं, अटेन्शन रखकर आगे बढ़ रहे हैं वही समय को समीप लायेंगे।

प्रश्न:- हमारे सामने साकार रूप में अपनी दादियाँ हैं। दादियों की स्टेज की पराकाष्ठा देखने योग्य है। ऊंची स्टेज के साथ समस्या भी उतनी ऊंची आती है। तो दादी आप पुरुषार्थ कैसे करती हैं, जो बातें भी सब सामना कर रही हैं और आपकी अवस्था सेवा भी कर रही है?

उत्तर:- मूल बात है कि हम अपने ऊपर बोझ न उठायें।

करावनहार मेरे द्वारा करा रहा है। मैं कर रही हूँ, मेरी जिम्मेवारी है, मेरी समझने से बोझ होता है। अगर निमित्त भाव होता है तो हल्कापन आ जाता है। रॉयल रूप का मैं पन कभी न आये। बाबा करावनहार हमसे करा रहा है, जिम्मेवारी उसकी है।

दादी से हम पूछते हैं कि आपको बोझ नहीं लगता है! तो वो कहती है मैं कर रही हूँ क्या! जो बोझ लगे। बाबा कराने वाला है जब यह भूल जाता है तब बोझ का अनुभव होता है। मेरा भी यही अनुभव है।

प्रश्न:- दो किसम के लोग हैं, एक सतोप्रधान स्थिति वाले और दूसरे तमोप्रधान स्थिति वाले, तो समय किसके लिए रुका है? क्या तमोप्रधानता वाले जब तमो रजो से सतोप्रधान बनेंगे तब तक समय ठहरेगा?

उत्तर:- समय किसके लिए ठहरता नहीं है। बाबा उमंग-उत्साह दिलाने के लिए कहता है जो हम अपनी कमी को देखकर ठीक कर लें। बाकी 12 बजना है तो बजना ही है। हमारे को बाबा कमी कैसे बताये, उसके लिए बाबा हमको रियलाइज़ कराने चाहता है कि आपका पुरुषार्थ इतना कम है।

प्रश्न:- समय प्रमाण क्या पुरुषार्थ करें?

उत्तर:- पुरुषार्थ यही है, करावनहार बाबा मेरे से करा रहा है, जरा भी मैपन न हो। आप देखो जब हनुमान के पूंछ में आग लगी तभी लंका जली। अगर यह मैपन की रॉयल पूछ नहीं जलेगी तो लंका को आग कैसे लगेगी। बाबा की इच्छा भी यही है। बाबा, बाबा, बाबा, मैपन खत्म हो जाये। कराने वाला बाबा करा रहा है, मैं सिर्फ कर रही हूँ। निमित्त भाव हल्का रखता है। निमित्तपन नहीं है तभी बोझ लगता है। अभी स्वयं को देखना औरों को नहीं देखना, औरों को और ही शुभ भावना, शुभ कामना देते और ही आगे बढ़ाने की कोशिश करना है। अच्छा।

दादी जानकी जी द्वारा मिले हुए अनमोल रत्न

(विशेष द्वितीय स्मृति दिवस)

1) जो कभी किसी को किसी प्रकार से दुःख नहीं देते हैं, उनका चार्ट अच्छा रहता है। मैं हमेशा यही ध्यान रखती हूँ कि मैं किसी को दुःख न दूँ। बाबा कहते चार्ट उसका अच्छा है जिसकी बुद्धि मुरली सुनते बाहर कहीं भी न जाती हो। मुरली की गहराई में भले जायें पर और कहीं बुद्धि न जाये। दूसरी बात दुःख लेना नहीं

है। मेरे से ऐसी कोई भूल न हो जो कोई को देखकर आश्चर्य लगे कि देखो यह क्या करती है? ... अगर मुझे कोई दुःख देने की कोशिश करे, तो भी मैं नहीं लूंगी। कोई पत्थर भी मारे, कई बार मारते हैं परन्तु फिर भी दुःख नहीं लेंगी, क्योंकि जिस घड़ी दुःख ले लिया, वो अन्दर एक बार चला गया तो फिर वो जायेगा नहीं।

फिर एक में दूसरा, दूसरे में तीसरा, तीसरे में चौथा... मेरी जीवन ही दुःखी हो जायेगी।

2) सारे विश्वभर में जितनी भी आत्मायें हैं, ब्राह्मणों में भी मेरे जैसा सुखी कोई नहीं। यह अन्दर से ईश्वरीय शान है। मेरे को किसी ने कभी दुःखी देखा है? नहीं ना! क्योंकि यह मेरा शान नहीं है। बाहर वाले भले कोई दुःख देते हैं, टेस्ट लेते हैं, यह भी हमारी स्थिति को मजबूत बनाने के लिए इशारा मिलता है। हिलती तो नहीं है? हलचल हो और हिले तो यह क्या है? अभी तो आगे चलके बहुत हलचल आने वाली है। तो अन्दर यह पक्का हो कि मुझे किसी को कभी दुःख नहीं देना है। अगर थोड़ा भी किसको दुःख दिया तो वह आजकल के हिसाब से बड़ा पाप है, इसलिए दुःख किसी को भी न दो। बाबा का घर है, दाता का दर है। परन्तु कई बार देखते हैं कि कोई हैं जो जानबूझके किसी को दुःख नहीं देते हैं, लेकिन सामने वाला अपने स्वभाव के वश दुःख ले लेता है।

3) एक है पुरुषार्थ और सेवा में सफलता, दूसरा है कोई भी बात हार न खिलाये, विजयी बनों। हर दिन कोई बात आई होगी, परन्तु बाबा की मदद कहें अथवा अपना स्वयं का ध्यान है, जो बाबा ने कहा जो ओटे सो अर्जुन। तो हमको अर्जुन बनना अच्छा लगता है। किसी को न देख जो मुझे करना है, उसमें लग जाना है, मेरे लिए दूसरा कोई पुरुषार्थ नहीं करेगा। बाबा भी मदद तब करेगा जब मैं सच्चा पुरुषार्थ करूंगी। मैं कोई बहाना दूंगी तो बाबा मेरी केयर नहीं करेगा, क्योंकि बड़े हो गये हैं। अभी भी समझो हम समय की वैल्यू नहीं रखते, व्यर्थ चिंतन में समय गँवाते तो व्यर्थ चिंतन छोड़ेगा नहीं और ही बढ़ेगा। वास्तव में मुझे जिस बात में सोचने की जरूरत नहीं है, फिर भी मैं फालतू सोचूँ तो क्या होगा!

4) ड्रामा का ज्ञान हमें इतना मीठा बनाता है, हर आत्मा का पार्ट अपना है। बाबा हर बात की समझानी देता है, विधि बताता है, तुम बच्चे अपना सोचो। अपना चेहरा तो अच्छा रखो। आदि से महान मन्त्र मिला हुआ है तुम मनमनाभव रहो। किसी भी बात में तुम बीच में नहीं आओ क्योंकि बाबा बैठा है। अपने कर्मबन्धन तोड़ दिये, अभी किसी के हिसाब-किताब में तुम क्यों बीच में आते हो? कोई बुरा है या अच्छा है, बाबा जाने। कईयों को वकालत का धन्धा बहुत अच्छा लगता है, पर बाबा कहता था यह खोटा धन्धा है। अभिमान वश जल्दी जजमेन्ट दे देगा। अरे! तुमको किसने कहा है।

5) तुम पहले अपने लिए अपना जज बनो, औरों के लिए नहीं।

तो इस प्रकार के जो संकल्प हैं, वो शान्त, शुद्ध, श्रेष्ठ संकल्प पैदा करने में बड़ा समय व्यर्थ गँवाते हैं। तो औरों की बातों में नहीं जाओ। एक बाबा का हूँ, मैं आत्मा हूँ, ड्रामा में हरेक का पार्ट नूँधा हुआ है, हरेक पुरुषार्थ कर रहा है। हो सकता है, कोई मेरे से आगे चला जाये तो भले जाये, परन्तु मैं अपने याद की यात्रा में ऐसे रहूँ... बस घर जा रही हूँ, बाबा के सामने बैठी हूँ।

हमारे जीवन में 4 गुण सदा होने चाहिए

1) धीरज, मन को धीरज दो। जल्दी अधैर्य न हो जाओ, अधैर्यता व्यर्थ चिंतन में ले जाती है, दुःखी बनाती है।

2) सहनशीलता, इसकी गहराई में जायेंगे तो सहन करने की शक्ति आती है। मुझे सहन करना पड़ता है, माना दुःख हुआ। शक्ल में थोड़ा भारीपन आयेगा, कभी आँखें गीली भी हो जायेंगी तो वो सहनशीलता नहीं है।

3) सबके साथ हमारा मित्रता भाव हो। मेरा कोई शत्रु नहीं है। निंदा हमारी जो करे मित्र हमारा सोय। जो महिमा करे उसको मित्र मानो, जिसने कुछ निंदा की गलत बोला, उसको शत्रु मानो, यह लक्षण ज्ञानी तू आत्मा के नहीं हैं। महिमा करने वाले तो मुझे खुश भी कर सकते हैं, आज महिमा करेगे कल कुछ भी कर सकते हैं, इसलिए वो मेरे जीवन का आधार न हो। महिमा के आधार से मैं सेवा में रहूँ, उनसे मेरा अच्छा सम्बन्ध रहे... नहीं। रूहानियत है, ईश्वरीय स्नेह है, तो वह बात पूरी हो जायेगी। सहनशीलता सुखी रखेगी इसलिए हमारा हरेक के साथ मित्रता भाव कभी न छूटे, कुछ भी हो, मित्रता भाव में सब कुछ समा लेते हैं। बाबा ने जैसे हरेक को अपना मित्र माना। बात आती हैं चली जाती है, बातों के कारण हमारे आपसी सम्बन्ध ठीक न रहें, यह मेरे लिए शान नहीं है।

4) गम्भीरता का गुण, यह गुण हमें ज्ञानी तू आत्मा बना देता है। जैसे बाबा मुस्कराता कैसे है, बाबा की मुस्कराहट में साधारणता तो नहीं है ना! बाबा की मुस्कराहट में बहुत शक्ति और शिक्षायें समाई हुई हैं। शब्द थोड़े, रूप बड़ा स्नेह और शक्ति वाला हो, साधारण न हो। दूसरा रूहानियत में रमणीकता हो। कोई सीन ऐसी आ जाये तो सीरियस न बन जाये। सीन देखके सीरियस हो जायेंगे तो हमारे मन का इफेक्ट तन पर भी आयेगा, वायुमण्डल में भी आयेगा। वायुमण्डल को सदा शान्त, सच्चाई, प्रेम वाला रखना, उसमें दुःख की लेन-देन का बिजनेस बन्द हो जाये। अगर थकावट वाला या सीरियस रूप है तो दुःख की लेन-देन का वायुमण्डल हो जाता है। हमें वो नहीं करना है। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

साइलेन्स की शक्ति जमा करो

1) योगी सदा प्रभु का प्यारा है अर्थात् बाबा के प्यारे वही है जिसे एक बाबा ही प्यारा है और प्यारा वही है जो अपने को सदा राजयोगी समझता है। संगमयुग पर हम सबका उद्देश्य है - राजयोगी बनना। हमारा कुल ब्राह्मण है, लक्ष्य है देवता बनना। हम सभी राजयोगी सो राजऋषि हैं। ऋषि अर्थात् ब्रह्माचारी, गृहस्थी नहीं। हम ब्रह्माचारी सो ब्रह्माचारी हैं। हमारे सर्व सम्बन्ध एक बाप से हैं। हम उस सच्चे माशूक के आशिक हैं, हम सभी उस सच्चे माशूक के इश्क को जानते हैं।

2) एक बाबा की लगन कितनी प्यारी, मीठी, सुखदाई है। ऐसी लगन में मगन रहने वाले कभी किसी दूसरे की लगन में नहीं जायेंगे। अगर किसी की आपस में बहुत-बहुत प्रीत होती है तो उसे तोड़ना मुश्किल होता है। ऐसे जब बाप से हमारी पूरी लगन है, प्रीत है तो यह भी गुप्त खुशी वा नशा रहता है कि हमने तो उसी बाप को पाया है। सारी दुनिया कुछ भी नहीं है, एक तू इतना प्यारा है। हम उसी प्यार के समुद्र की नदियां हैं। इसी को ही हम कहते हैं निरन्तर योग में रहना, यह मस्ती बड़ी निराली है। बाबा के प्यार का अनुभव करते उसी मस्ती में रहो तो दूसरी कोई भी बात सामने आ नहीं सकती। यह पुरुषार्थ की बहुत सहज विधि है।

3) कई योग लगाते, मेहनत करते हैं लेकिन अनुभव नहीं होता। कहते हैं मेरा एक बाबा दूसरा न कोई। यही पुरुषार्थ करते हैं कि मैं आत्मा हूँ, मेरा बाबा प्यारा शिवबाबा है, मुझे बाबा की सेवा में तत्पर रहना है। जितना समय बाबा की सेवा में जाये उतना अच्छा है। लेकिन अनुभव हो कि मैं आत्मा इस शरीर से अलग हूँ, मैं आत्मा सुनती हूँ, आत्मा बोलती हूँ, यह मेरा शरीर है..। यह अभ्यास कम है। जब हमने कहा - मैं आत्मा आपकी हूँ, तो मेरा सब कुछ आपका है अर्थात् मैं बाबा को ही समर्पित हूँ। आप आत्मा एक बाबा पर समर्पित हो जाओ तो यह जो संकल्प वा बुद्धि इधर-उधर भटकती है, वह भी समर्पण हो जायेगी। फिर यह कम्पलेन खत्म हो जायेगी कि क्या करूँ मन भटकता है। विचार शक्ति, बुद्धि की शक्ति को समर्पण कर

दो। फिर यह भी नहीं कह सकते कि यह मेरे संस्कार हैं।

4) कभी किसी ने यह नहीं कहा कि बाबा का संस्कार ऐसा है, बाबा ने भी कभी नहीं कहा कि क्या करूँ मेरा यह संस्कार है... तो हमें अगर बाबा के समान बनना है तो संस्कारों के वश होकरके नहीं चलना है। यह संस्कार भी बाबा के हो गये। जैसा बाप वैसी मैं... यही मेरा पुरुषार्थ है। फिर यह जो कहते कि मेरा स्वभाव, मेरे संस्कार - ऐसी अनेक प्रकार की जो माया है वह समाप्त हो जाती है। बाबा भी कहते बच्चे मोहब्बत में रहो तो मेहनत से छूट जायेंगे। जब कोई माया से युद्ध करते हैं तो तरस पड़ता है। रावण के एक-एक शीश को कब तक काटते रहेंगे। एक मूल शीश को ही काट दो तो दसों कट जायेंगे।

5) बाबा कहते तुम सब हो कठपुतलियां और तुम कठपुतलियों को मैंने दी है श्रीमत की चाबी। तो बाबा ने जो श्रीमत की चाबी दी है उसी अनुसार बेफिकर बादशाह बन निश्चिन्त हो खेल करो। लेकिन सदा समझो हम राजऋषि, राजयोगी हैं। अपना आक्वूपेशन नहीं भूलो। योगी के लिए मूल चाहिए ज्ञान से पुरानी दुनिया का वैराग्य। हम हैं योगी लोग, न कोई अपना न कोई पराया। हमें कौन जानें।

6) हे आत्मा तू बाबा के सामने मन बुद्धि सहित स्वाहा हो जाओ। जब सब स्वाहा हो जायेगा तब पुरानी दुनिया से बेहद का वैराग्य आयेगा। पुरानी दुनिया तब तक खींचती है जब तक समर्पण नहीं हुए हैं। संकल्प शक्ति भी समर्पण हो तो दूसरी कोई भी बात सामने नहीं आ सकती। इसी का नाम है तपस्या। तो पहले अपने आपका त्याग करो अर्थात् समर्पण हो जाओ। जब आत्मा स्वयं समर्पण हो गई फिर तपस्या करना, अशरीरी बनना बहुत सहज है।

7) अभी हमारी तपस्या की दुनिया को भी दरकार है। तत्वों को भी इसकी दरकार है। हम सब देख रहे हैं दुनिया की हालत दिन-प्रतिदिन गम्भीर होती जाती है, यह दुनिया की गम्भीर बातें हमें और भी प्रेरणा देती हैं कि हमें तपस्या करके विश्व को अपने साइलेन्स की किरणों देनी है। अच्छा। ओम् शान्ति।